INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

इक्कीसवीं सदी की कवयित्रियों के साहित्य का पक्ष

शोध निर्देशक
डॉ० संतोष कुमार यादव
सहायक आचार्य (हिन्दी विभाग)
डी०ए०वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलंदशहर
शोधार्थी
निशा यादव
डी०ए०वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलंदशहर

इक्कीसवीं सदी की प्रमुख कवयित्रियों का साहित्यिक पक्ष अत्यन्त समृद्ध, विविधतापूर्ण और समकालीन जीवन की जटिलताओं से गहराई की जुड़ा हुआ है। इस काल की कवयित्रियाँ केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और नारी अस्मिता से जुड़े मुद्दों को अपनी रचनाओं में प्रमुखता दी है। उनके साहित्य में अनुभव की प्रामाणिकता और अभिव्यक्ति की नवीनता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस युग की कवयित्रियों की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने स्त्री जीवन के विविध आयामों को अत्यन्त संवेदनशीलता तथा स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया है। वे पारम्परिक बन्धनों को चुनौती देती हैं और स्त्री की स्वतन्त्र पहचान, अधिकार और आत्मसम्मान की स्थापना का प्रयास करती हैं। उनके काव्य में स्त्री केवल करुणा की प्रतीक नहीं, बल्कि संघर्षशील और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में उभरती है। इक्कीसवीं सदी की कवयित्रियों ने भाषा और शिल्प के स्तर पर भी नये प्रयोग किए हैं। उनकी भाषा सरल, सहज और बोलचाल के निकट है, जिससे पाठक सीधे जुड़ाव महसूस करता है।

“21वीं सदी तक आते–आते स्त्रियों ने अपनी रचनाशक्ति को पहचाना और अपने अधिकारों को लेकर सजग हुईं। कविता के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी कुशलता का परिचय दिया और नयी सदी के आरम्भ से ही कवयित्रियों ने कवियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर अपनी उपस्थिति पुरजोर ढंग से दर्ज की है। आज कवयित्रियाँ केवल स्त्री सम्बन्धी काव्य–सृजन ही नहीं कर रहीं, अपितु व्यापक दृष्टिकोण के द्वारा जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक पहलू के साथ–साथ अन्य देशीय–अन्तर्देशीय विषयों पर भी अपनी लेखनी का जादू बिखेर रही हैं।”[1]

नयी सदी की कवयित्रियाँ प्रतीक, बिम्ब और रूपकों का प्रयोग कर अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार उनकी कविता में कलात्मकता और सम्प्रेषणीयता का संतुलन देखने को मिलता है। इनके काव्य में समकालीन समाज की समस्याओं, जैसे वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, पर्यावरण संकट, युद्ध, विस्थापन और अकेलेपन का भी सशक्त चित्रण मिलता है। वे इन विषयों को केवल सतही स्तर पर नहीं, बल्कि गहन चिन्तन के साथ प्रस्तुत करती हैं, जिससे उनका साहित्य विचारोत्तेजक बन जाता है। इस सदी की कवयित्रियों ने व्यक्तिगत अनुभवों को भी सामाजिक संदर्भों से जोड़ा है। उनके काव्य में निजी जीवन की पीड़ा, प्रेम, स्मृतियाँ और आत्म–संघर्ष व्यापक मानवीय अनुभवों का रूप ले लेते हैं। इस प्रकार उनका काव्य व्यक्तिगत होते हुए भी सार्वभौमिकता प्राप्त करता है। ये कवयित्रियाँ परम्परा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं। वे भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को स्वीकार करते हुए भी अंधानुकरण से बचती हैं और नयी दृष्टि के साथ उन्हें पुनर्परिभाषित करती हैं। इस प्रकार उनका साहित्य सांस्कृतिक चेतना और नवाचार का संगम प्रस्तुत करता हैं।

नयी सदी क्रान्ति और प्रगति की सदी है। आधुनिक भारत वर्ष में समाज व्यवस्था में जो बदलाव आये हैं, उसमे समाज सुधारकों के बाद साहित्यकारों का बड़ा योगदान रहा है। हिन्दी साहित्यकारों ने समाज की सड़ी गली परम्पराओं पर अपने कलम के बल पर अनेकानेक विधाओं से कठोर प्रहार किये हैं। दलित वर्ग की पीड़ा, त्रासदी, आक्रोश एवं दर्द को अभिव्यक्त किया है। ‘‘समाज व्यवस्था को बदलने में कवयित्रियों ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाज में जो दमन, शोषण, अन्याय, अत्याचार एवं शोषण है, उसके विरोध में दलित वर्ग किस प्रकार खड़ा है, इसका यथार्थ वर्णन रमणिका गुप्ता जैसी कवयित्रियों ने किया है।’’[2]

इक्कीसवीं सदी में समाज, परिवार और व्यक्ति, सभी स्तरों पर जो तीव्रता से बदलाव आया है, उसका असर हिन्दी साहित्य पर भी व्यापक रूप से परिलक्षित होता है, मुख्यतः नारी शिक्षा के कारण स्त्रियों की मानसिक स्थिति और बौद्धिक स्थिति में भी बदलाव हुए हैं। उन्होंने पुरानी मान्यताओं को तोड़कर व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का मार्ग अपनाया है। 21वीं सदी के साहित्य का स्वरूप वह नहीं रह गया, जो स्वतन्त्रता पूर्व हुआ करता था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्त्री अपनी सही भूमिका को तलाशती हुई स्वयं को पहचानने और कुण्ठा से मुक्त करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। उसके संकल्प की दृढ़ता और आत्मरक्षा से परिपूर्ण निष्ठा समाज में उसे लेखनी के माध्यम से प्रतिष्ठित करने में सहायक सिद्ध हो रही है। 21वीं सदी का नारी लेखन हमें आधुनिकता, वैज्ञानिकता, तार्किकता, समसामयिकता, एकता तथा युगीन भावबोध का परिचय कराता है। आज का नारी लेखन उच्चकोटि का होने के साथ–साथ वैविध्यपूर्ण भी है। इस सदी की महिलाओं ने अपने लेखन में जीवन और समाज के सभी रंगों को अपनी तूलिका रूपी लेखनी से बड़ी ही भावात्मकता और कलात्मकता से उकेरा है, जो आधुनिक साहित्य का महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

‘‘इक्कीसवीं सदी के लेखन में कहीं वृद्ध जीवन की समस्या है, तो कहीं नारी मुक्ति की छटपटाहट है। कहीं किसी बड़े परिवार की समस्या है तो कहीं आधुनिक जीवन के खोखलेपन की। घरेलू जीवन की यातनाओं से पीड़ित नारी है, तो कहीं सामाजिक समस्याओं की यातना झेलती स्त्री है। इन सभी पक्षों का संवेदनशील चित्रण यहाँ यथार्थ रूप में उपस्थित हुआ है।’’[3]

इक्कीसवीं सदी की कवयित्रियों का लेखन क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है, इसमें स्त्री विमर्श एवं स्त्री चेतना का स्वर प्रमुख रूप से उभरा है। इनकी कविताओं में नयी सदी की नारी की चुनौतियों, अवरोधों और चिंताओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। ये कवयित्रियाँ ‘आँचल में है दूध और आँखों में पानी’ की धारणा को मिथ्या सिद्ध करती हैं और अपनी अस्मिता की रक्षा करने वाली तथा अपनी पहचान बनाने वाली नारियों का अभिनंदन करती हैं। ये नारी के अन्तरंग में छिपे विषम, जटिल और अनसुलझे प्रश्नों को समझदारी से समझने और सुलझाने का प्रयास करती हैं। इन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि अभी भी बहुत कुछ संम्भालना बाकी है और परिवर्तन बाकी है, जिसके लिए नारी ने सदियों संघर्ष किया है। सुप्रसिद्ध कवयित्री ममता कालिया की कविताएँ पढ़ते समय ऐसा लगता है कि हम अपने संघर्षशील घर–परिवार के हालात का अनुभव कर रहे हैं। अपने ही जैसे लोगों के बीच से गुजर रहे हैं, जिसमें परिचय और मनुष्यता का सुख तो है, पर यातनाओं का सिलसिला भी है, जो किसी भी संवेदनशील मन को झकझोरता है। हमारे चारों ओर घट रही घटनाओं का परिचय भी हमें इन कविताओं से प्राप्त होता है। वे लिखती हैं –

‘‘एक नदी की तरह
सीख गयी घरेलू औरत
दोनों हाथों में बर्तन थाम
चौके से बैठक तक लपकना
जरा भी लड़खड़ाए बिना

एक साँस में वह चढ़ जाती है सीढ़ियाँ
और घुस जाती है लोकल में
धक्का—मुक्की की परवाह किये बिना
राशन की कतार उसे लम्बी नहीं लगती
रिक्शे ना मिले
तो दोनों हाथों में झोले लटकाये
वह पहुँच जाती है अपने घर
एक भी बार पसीना पोंछे बिना
एक कटोरी दही में तीन कटोरी रायता बना लेती है
खाँटी घरेलू औरत
पाव भर कद्दू में घर भर को खिला लेती है
जरा भी घबराये बिना।''[4]

कवयित्री अनामिका की कविताओं में हमें कमजोर और सशक्त दोनों ही नारियों का चित्रण देखने को मिलता है। उनका उद्देश्य है कि स्त्री को उसके अस्तित्व के प्रति जागरूक किया जाये। उसे 'मैं' की चिन्ता का अहसास कराया जाये, उसे मानवीय बनाया जाये। पुरुष के समान ही उसे भी इंसान समझा जाये और उसके दुःख, दर्द, पीड़ा के कारणों को समाज तक पहुँचाया जाये। उन्होंने स्त्री के पक्ष को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। परम्परागत और आधुनिकता में स्त्री में आये बदलाव को भी प्रत्यक्ष किया है। उनका मानना है कि चूँकि स्त्री घर का काम संभालती है, इसलिए उसे हर जगह उपेक्षित किया जाता है। वह मन ही मन सोचती है कि क्या मेरी अपनी भी कोई पहचान है, क्या मेरा भी कोई अस्तित्व है। वे प्रश्न उठाती हैं—

''क्या खुद मैं अपनी पड़ोसन हूँ?
क्या मैंने खुद से ही किया है नमस्ते?
क्या मेरे दोनों हाथ जुड़े हैं कभी
अपने भीतर के उस मैं की खातिर...।''[5]

अनामिका की कविताओं में हमें स्त्री का परित्यक्ता रूप, प्रश्नातुर स्त्री, मौन को तोड़ती स्त्री, अस्मिता बोध के प्रति सजग स्त्री, विद्रोह करने वाली स्त्री, सामंजस्य स्थापित करने वाली स्त्री, दोहरी भूमिका निभाने वाली स्त्री का चित्रण देखने को मिलता है। यहाँ स्त्री पारंपरिक रूप से स्थापित छवि का खंडन कर रही है। वह अपनी पूजा नहीं चाहती, न ही निंदा। वह बस पुरुषों के समान ही अधिकार स्वरूप जीना चाहती है। वे लिखती हैं—

''पढ़ा गया है हमको
जैसे पढ़ा जाता है कागज
बच्चों की फटी कॉपियों का
चनाजोरगरम के लिफाफे बनाने के पहले
सुना गया हमको
यों ही उड़ते मन से
जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने
सस्ते कैसेटों पर
ठसाठस ठुंसी हुई बस में
हम भी इंसान हैं

हमें कायदे से पढ़ो, एक–एक अक्षर
जैसे पढ़ा होगा बी.ए. के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन।''[6]

नयी सदी की कवयित्रियों ने स्त्री की मनोदशा को सौहार्द और आत्मीयता से समझा है। संवेदना का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है, जिसे महिला लेखन ने स्पर्श न किया हो। स्वयं के जीवन की तथा अपने संपर्क में आने वाली प्रत्येक पीड़ित–शोषित स्त्री की मनोदशा–मनोव्यथा को इनकी कलम ने पकड़ा है। महिला लेखन में कवयित्रियों ने वर्तमान परिदृश्यों के संदर्भ में व्यंग्य, तीक्ष्णता, विद्रोह और आक्रोश को व्यक्त किया है। कवयित्री सविता सिंह ने अपनी कविता में नारी जीवन की संघर्षमय गाथा का सहानुभूति एवं स्वानुभूति के परिप्रेक्ष्य में चिन्तन करते हुए लिखा है–

''स्त्रियों! बार–बार मैं तुम्हारी कथा कहूँगी
उतरूँगी जीवन की अंधेरी खोह में
दूर तक बढ़ूँगी, पहुँचूँगी वहाँ जहाँ तक
थोड़ी–सी रोशनी बाकी होगी।
देखूँगी तुम्हारे प्राचीन चेहरे, जो अब तक
दस्तावेजों की तरह सुरक्षित होंगे वहाँ
उससे ही जान लूँगी तुम्हारा हाल
और यह सब समझ लूँगी कि बहुत फर्क नहीं है
एक दूसरे के हाल–चाल में अब भी।''[7]

सामाजिक परिवेश में स्त्री हमेशा अपने आप को असुरक्षित महसूस करती है। घर में और घर के बाहर प्रत्येक जगह उसे भय, द्वेष एवं स्पर्धा का सामना करना पड़ता है। सविता सिंह अपनी कविता 'एक शीशा थी वह' कविता में इसी बेचैनी को व्यक्त करते हुए लिखती हैं–

''बदल गयी थी मगर वह एक पारदर्शी शीशे में
जिससे आर–पार देख रही थी खुद को
पसरा था बाहर अब भी कितना भय कितनी घृणा
द्वेष और स्पर्धा के लिए
मृत्यु और नींद महसूस होती थी उसको
एक विस्तार अजीब–सा
भयावह और सुनसान इस समय।''[8]

स्त्री की यथास्थिति को बनाये रखने के गुनाहगार केवल पुरुष समाज ही नहीं है, बल्कि स्त्री भी स्वयं दूसरी स्त्री के अस्तित्व को सदियों से नकारती आई है। घर में लड़की के जन्म पर पहले दादी दुःखी होती है, फिर माँ दुःखी होती है, उसके बाद नवजात कन्या शिशु के प्रति व्यवहार में केवल इसलिए उपेक्षिता का भाव लाया जाता है, क्योंकि वह कन्या है। उसे पग–पग पर एहसास कराया जाता है कि उसका दर्जा दूसरा है, उसे बार–बार नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाता है, उसे 'लड़की' बनाया जाता है। यह परिवार और समाज उसे उसी रूप में ढालता है, जैसा उसे चाहिए होता है। उसकी प्राथमिकताएँ उसके जन्म लेते ही निर्धारित कर दी जाती हैं। कवयित्री रेखा रानी ने अपनी 'लाचारी' कविता में इस विडम्बना को प्रस्तुत किया है–

''लड़की का जन्म घर में हुआ
इसलिए दोबारा से औलाद

को जन्म देने की हुई तैयारी
माँ के सिर एक के बाद
अब दूसरी जिम्मेदारी थी भारी
मुझे पालना है, इसको भूल
लड़के के जतन में लग गयी
माँ व दादी हमारी।"[9]

स्त्री मुक्ति की पक्षधर कवयित्रियों में गिनी जाने वाली सुप्रसिद्ध कवयित्री गगन गिल की कविता 'सिर्फ शव' हृदय–स्पर्शी प्रश्नों का जाल बुनती है। जिन्दा रहती स्त्री कोई प्रश्न नहीं कर सकती। उसे अनेक घात–प्रतिघातों का डर रहता है, लेकिन 'शव' हुई रूह को किसी के वर्चस्व आधिपत्य का डर नहीं होता है। वे कहती हैं–

"सिर्फ शव
पूछता है प्रश्न
हर युग में...
सिर्फ शव है
जो दूर नहीं जा सकता
अपनी देह से
और पूछ सकता है प्रश्न।"[10]

कवयित्री नीलेश रघुवंशी का मन्तव्य है कि स्त्री अपने हिस्से के आसमान को मुलायम बनाती हुई भविष्योन्मुख होती है। अब यह तो समय ही तय करेगा कि उसकी और संसार की क्या परिणति होती है। वे लिखती हैं कि, "इक्कीसवीं सदी उन्माद और उद्वेन्माद की सदी होगी। या होगी उजड़ते संसार में एक हरी पत्ती की तरह।"[11]

निष्कर्षतः इक्कीसवीं सदी की कवयित्रियों के साहित्य का पक्ष न केवल समकालीन समाज का दर्पण है, बल्कि वह परिवर्तन का माध्यम भी है। उनकी रचनाएँ पाठकों को सोचने, समझने और सामाजिक बदलाव के प्रति जागरूक होने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार उनका काव्य आधुनिक हिन्दी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण और सशक्त स्थान रखता है। नयी सदी की कवयित्रियों के काव्य में विद्रोह और संवेदना का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। वह अन्य असमानता और शोषण के विरुद्ध मुखर होकर अपनी आवाज उठाती हैं वहीं दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं को भी गहराई से अभिव्यक्त करती हैं यह द्वंद्व उनके साहित्य को अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनाता है।

संदर्भ:–

(1) अग्रवाल, डॉ० श्वेता– 21वीं सदी की प्रमुख कवयित्रियों का हिंदी कविता में अवदान, प्रगतिशील प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण– 2020, पृ०– 30.

(2) वही, पृ०– 36.

(3) वाघ, डॉ० विजय– 21वीं सदी का हिन्दी काव्य:विविध आयाम, नेशनल प्रेस प्लेटफॉर्म, संस्करण– 2023, पृ०– 9.

(4) कालिया, ममता– खाँटी घरेलू औरत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण– 2004, पृ०– 20.

(5) अनामिका– दूब–धान, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, संस्करण– 2008, पृ०– 102.

(6) अनामिका– खुरदरी हथेलियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण– 2009, पृ०– 13–14.

(7) सिंह, सविता– नींद थी और रात थी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं०– 2007, पृ०– 24.
(8) वही, पृ०– 33.
(9) रानी, रेखा– खामोशियाँ बोलती हैं, साहित्य संचयन, दिल्ली, संस्करण– 2018, पृ०– 12.
(10) गिल, गगन– अंधेरे में बुद्ध, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण– 2002, पृ०– 125.
(11) रघुवंशी, नीलेश– पानी का स्वाद, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं०– 2012, पृ०– 61.

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

R S E A R C H G A T E W A Y

A R O G Y A M O N L I N E

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध
ISSN 2321 – 9726
WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY
ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)
WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE
ISSN 2319 – 9202
WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES
ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)
WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY
ISSN 2454-3195 (online)
WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION
ISSN 2582-5445
WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH
WWW.JLPER.COM